ISSN 2394-6059

वैदिक ऋषि महीदास ऐतरेय की पृथ्वी के भौगोलिक–पर्यावरण से संबंधित अवधारणाऐं

महेश दुर्गापाल
शोधछात्र, संस्कृत विभाग
पौड़ी परिसर, हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय

सारांश

भारतीय समाज में विचारों की मीमांसा का एक सुन्दर इतिहास है। इसके लिये विश्व समुदाय इसको जितना भी साधुवाद दे वह अल्प ही है। मानव शास्त्र के प्रथम रचनाकार आदिपुरूष मनु ने मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय में कहा है – कि यही वह भारत है जहां पर विश्व समुदाय को शिक्षित करने के लिये विचारों ने जन्म लिया। हमारे लिये ऐसे वाक्य हमारी राष्ट्रीय धरोहर हैं। ये विचार किसी एक काल तक ही प्रासंगिक न होकर सार्वकालिक हैं। आज के समाज के लिये हम प्राचीन विाचारकों के शास्त्रों से अनेकों ऐसे तथ्य प्रकाशित कर सकते हैं जो वर्तमान समाज की शिक्षण विधियों में प्रासंगिक हो सकती हैं। प्राचीन भारत में महीदास ऐतरेय नामक एक अत्यन्त प्रसिद्ध वैदिक ऋषि हो चुके हैं। इनके विभिन्न शास्त्र संस्कृत भाषा में विद्यमान हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में ऋषि ऐतरेय के एक उपलब्ध उपनिषद् ग्रन्थ ऐतरेयोपनिषद् से उनके भौगोलिक विचारों का प्रकाशन किया गया है।

कुंजी शब्द – भौगोलिक पर्यावरण, ऐतरेय उपनिषद्, अम्भलोक, मरीचिलोक, मरलोक, अपलोक।

विषय विवेचना

पृथ्वी के भौगोलिक पर्यावरण में पृथ्वी पर रहने वाले जीवों व उनकों प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया जाता है। पृथ्वी के इस अध्ययन को भौतिक व जैविक दो प्रकार से बांटा गया है। भौतिक पर्यावरण मे पृथ्वी की सम्पूर्ण संरचना को विवेचित किया जाता है, जिसमें की जलमण्डल, स्थलमण्डल व वायुमण्डल आते हैं। यह सम्पूर्ण संरचना हमारी चारों ओर की प्रकृति है। जैविक पर्यावरण में पृथ्वी के प्राणियों का अध्ययन किया जाता है जोकि जंतु व पादप समुदाय के रूप में पाया जाता है। जैविक अर्थात जीव से संबंधित। इस तरह पृथ्वी के जैविक व भौगौलिक सम्बन्धों पर व्यापक प्रकाश भौगोलिक पर्यावरण के अध्ययन से ही पड़ता है। यद्यपि आज पर्यावरण विज्ञान एक पृथक विषय है तथापि इसमें भूगोल की अवधारणायें है जिससे

इसे भौगोलिक पर्यावरण कहना युक्तिसंगत लगता है। वर्तमान में पृथ्वी के मूल संरचनात्मक स्वरूप में हो रहे परिवर्तनों से ही यह विषय अत्याधिक प्रासंगिक बनता जा रहा है।

यह सर्वविधित है विश्व की सर्वप्रथम रचनाऐं संस्कृत भाषा से ही रची गयी थी। यह गौरवमयी पद हमारी वैदिक श्रुतियों को प्राप्त है। संस्कृत वांगमय को मुख्यतः वैदिक व लौकिक दो भागों में रखा जाता है। महात्मा बुद्ध से पूर्व की संस्कृत को सामान्यतः वैदिक व इसके बाद की संस्कृत को लौकिक कहा जाता है। संस्कृत वांगमय के उपलब्ध दोनों स्वरूपों में हो रहे शोधकार्यों से नित्य नये तथ्य प्रकाशित हो रहे हैं, इन्हीं शोध कार्यों में संस्कृत के विज्ञान परक तथ्यों का प्रकाशन भी हुआ है। ऐसे अध्ययनों से संस्कृत भाषा में उपलब्ध शास्त्रों का अध्ययन नित्य ही प्रासंगिक बनता जा रहा है। अनेकों विज्ञान से संबंधित शोध पत्रिकाओं में आपको संस्कृत के विचारकों का अध्ययन मिल सकता है। यह संस्कृत भाषा के विचरकों का वैज्ञानिक होना तो सिद्ध करता ही है साथ ही इस भाषा के अध्ययन को भी स्वयं प्रासंगिक बनाता है। भारत के सन्दर्भ में तो यह अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है।

संस्कृत भाषा के वैदिक वांगमय का एक व्यापक क्षेत्र है, जिसमें संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् आदि महानीय ग्रन्थ रखे जाते हैं। वैदिक वांगमय में उपलब्ध उपनिषदों में एतरेय नामक उपनिषद् अति प्रसिद्ध है। क्योंकि प्रत्येक उपनिषद् किसी वेद विशेष से संबंधित होता है अतः यह उपनिषद् ऋग्वेद् से संबंधित है। माना जाता है महिदास एतरेय ने इनकी रचना की थी। मुख्यतः यह ग्रन्थ तीन अध्यायों में विभाजित है। यह बहुत बड़ा ग्रन्थ न होने पर भी प्राचीन भारत के वैज्ञानिक अध्ययन के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस ग्रन्थ में पृथ्वी की भौगोलिक संरचना का विवेचन बड़ा ही विज्ञानसम्मत है। पृथ्वी की भौगोलिक संरचना के साथ–साथ पृथ्वी पर जीवों की उत्पत्ति सम्बन्धित विवेचना भी पूर्णतः विज्ञान के तथ्यों के अनुकूल प्रतीत होती है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में इसी विषय का प्रकाषन उपलब्ध ग्रन्थ के आधार पर किया गया है।

जब हम पृथ्वी की भौतिक संरचना की विवेचना करते हैं तब जल, स्थल व वायु तीनों मण्डलों में इसकी व्याख्या पृथक–पृथक रूप में करते हैं। सम्पूर्ण पृथ्वी का जलीय भाग 70.08 प्रतिशत है तथा स्थलीय भाग 29.2 प्रतिशत है।[1] जलीय भाग में महासागर, सागर, नदी, झील, तालाब आदि सम्मलित किये जाते हैं। स्थलीय भाग में पर्वत, पठार, मैदान आदि आते हैं। जल व स्थल पृथ्वी की मूल अवस्था है। तृतीय वायुमण्डल है, यह पृथ्वी की बाह्य संरचना है। वायुमण्डल में सामान्यतः पांच परतें पायी जाती हैं जो

क्रमशः क्षोभ, समताप, मध्य, आयन, बाह्य हैं।[2] इस तरह पृथ्वी की सामान्य भौगोलिक संरचना समझी जा सकती है।

हमारी इस पृथ्वी की भौगोलिक संरचना के बारे में जो विचार आधुनिक वैज्ञानिकों के हैं वह सार रूप में हमें प्रचीन ग्रन्थ ऐतरेयोपनिषद् में भी देखने को मिलते हैं। ऐतरेय उपनिषद् में इस प्रसंग में लिखा गया है – पूर्व में ब्रह्म आत्मस्वरूपात्मक अकेला था। ब्रहमा ने सृष्टी की रचना करनी चाही। उसने एक ऐसी सृष्टी रची जो मुख्यतः चार लोकों में विभाजित थी। ये चार अम्भलोक, मरीचिलोक, मरलोक व अपलोक थे। इनमें प्रथम दो अर्थात अम्भलोक व मरीचिलोक वायुमण्डल से सम्बधित प्रतीत होते हैं, क्योंकि इनकी स्थिति अन्तरिक्ष में बताई गई है। तृतीय लोक जोकि मरलोक, जलीय व स्थलीय जहां भी जीवन संभव है, उन जीव जन्तुओं के निवास स्थल से सम्बन्धित था। अन्तिम लोक आप था जोकि स्थल भाग के नीचे था –

"आत्मा वा इदमेकं एवाग्र असीत्। नान्यत्किंचन मिषत्। ईक्षत लोकान्नु सृजा इति"

"स इमांलोकानसृजत्। अम्भो मरीचिर्मरमापोदो अम्भः परेण दिवं द्यौः। प्रतिष्ठान्तरिक्षं मरीचयः पृथिवी मरो या अधस्तात्ता आपः।"[3]

इस तरह अम्भलोक व मरीचिलोक वायुमण्डल से, मरलोक जीवनिवास स्थल से व अपलोक भूगर्भीय जलीय अवस्था से संबन्धित थे। उपनिषदों पर प्रमाणिक भाष्य आचार्य शंकर के माने जाते हैं। हमें पता है संस्कृत के ये असाधारण विद्वान सातवीं आठवीं सदी में भारत में हुये हैं। ऐतरेय उपनिषद में प्रथमतः जिन चार लोकों की सृष्टी बताई गई है आचार्य शंकर ने उसकी पृथक–पृथक व्याख्या दी है। अतः उसका उल्लेख यहां पर करना आवश्यक है। प्रथम अम्भलोक के सबन्ध में आचार्य शंकर लिखते हैं वह लोक जहां बादल इत्यादि की रचना होती है "सो अम्भोशब्दवाच्यः, अम्भोभरणात्"[4] अर्थात इसे अम्भ इसलिए कहा जाता है क्योकि यह जल को धारण करता है। जब हम वायुमण्डल की वर्तमान वैज्ञानिक अवधारणा के आधार पर अध्ययन करते हैं तो इसे संरचनात्मक तरीके से पांच परतों में विभाजित करते हैं। इन पांच परतों में से जिसे क्षोभमण्डल कहा गया है वह समस्त मौसमीय घटनाओं से सम्बन्धित माना जाता है। मौसम संम्बन्धि सभी घटनाऐं जैसे– संघनन, वर्षण, ओलावृष्टी, बादलों में चमक आदि घटनाऐं इसी परत से सम्बन्धित हैं।[5] समस्त मौसमीय घटनाक्रम वर्षा इत्यादि के लिए आद्रता अर्थात जल का होना जरूरी है, अतः ऐतरेय ऋषि ने अम्भलोक कहकर इस क्षोभमण्डल को सम्बोधित किया है ऐसा प्रतीत होता है। यह पहला लोक था। अब द्वितीय लोक जोकि एतरेयोपनिषद मे मरीचिलोक कहा गया है उसकी विशेषता है "मरिचिभिर्वा रश्मिभिः सम्बन्धात्"[6] अर्थात यह किरणों से सम्बन्धित था। वायुमण्डल में दो

परतें किरणों से सम्बन्धित है समतापमण्डल व आयनमण्डल। ये दोनों मण्डल भिन्न–भिन्न किरणों से सम्बन्धित है। समतापमण्डल में एक ओजोनपरत पायी जाती है जोकि सूर्य से आने वाली पराबैंगनी किरणों को छानती है, जिससे पृथ्वीवासी सूर्य की पराबैंगनी किरणों के दुष्प्रभाव से सुरक्षित रहते हैं। दुसरा आयनमण्डल है जोकि संसार तकनिकी की समस्त किरणों के आदान–प्रदान से संम्बन्धित है।[7] ज्ञातव्य है कि संचार तकनिकी की किरणें कृत्रिम हैं जिनका उपयोग वर्तमान के संचार सम्प्रेषण में होता है। संभवतः ऋषि मरीचिलोक से पूर्वमण्डल ओजोन के किरणों की बात कर रहे हों क्योंकि संचार में कृत्रिमता का संबन्ध नया ही है। किन्तु यहां स्पष्ट करने वाली बात यह है कि, ऋषि ने वायुमण्डल में पृथक–पृथक परतें मानी और उनकी विशेषता बताई। यह विज्ञानसम्मत है। इनकी दो विशेषताऐ, किरणों से सम्बधित व जल धारण करने वाला भी बताई जो वर्तमान के विज्ञान के सर्वथा अनुकूल है। फिर मरिचयः बहुवचन का प्रयोग भी यही कहता है कि वायुमण्डल में एक हि परत नहीं थी। यदि आज पांच परतें मानी जाए तो ऐतऐय उपनिषद् का सिद्धान्त ग्राह्य होता है।

तृतीय मरलोक जीव–जन्तुओं के निवास से संबन्धित था इसे मरलोक इसलिए कहा है क्योंकि यहां प्राणी जन्म लेता है व मरता है। अन्तिम जिसे अपलोक कहा गया है वह स्थलभाग के नीचे था जैसा क भाष्यकार ने लिखा है "या अधस्तान आप उच्यन्ते।"[8] पृथ्वी की संरचना से संबन्धित कई महत्वपूर्ण सिद्धान्तों का प्रतिपदन हो चुका है, जैसे–बी0एफ0टेलर का महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धान्त, वेगनर का महाद्वीपीय प्रवाह सिद्धान्त व हेंस द्वारा प्रतिपादित प्लेट विवर्तनिकी आदि। इन सिद्धान्तों में भी पूर्णतः यह माना गया है पृथ्वी का स्थलीय भाग (जिसे भूगोल में सियाल नाम दिया गया है) आन्तरिक तरलभाग (भूगोल मे सीमा नाम दिया गया है) के उपर तैर रहा है[9] अर्थात स्थल के निचे तरल पदार्थ है। यहां महर्षि महिदास ऐतरेय के आप्तवाक्य वैज्ञनिक सिद्धान्तों की ओर अपना मत प्रस्तुत कर रहे हैं। अप जल को कहा जाता है किन्तु किसी तरल पदार्थ को भी प्रायः अप ही कहा जाता है। अतः ऋषि का मत यही है कि भूगर्भीय स्थिति तरल है जो कि पूर्णतः वैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुकूल प्रतीत हो रही है।

इसी उपनिषद् में एक और तथ्य यहां ध्यान देने योग्य है, जब सृष्टी की रचना हो चुकी थी तब ब्रह्मा ने जीव का निर्माण किया। इस सृजित जीव को संसार के महासमुद्र में छोड़ दिया तदन्तर सृष्टी प्रारम्भ हुई – ता एता देवताः सृष्टा अस्मिन् महत्यर्णवे प्रापतंस्तमशनायापिपासाभ्यामन्ववार्जत्।[10] यहां भी महर्षि वैज्ञानिक तथ्य दे रहे हैं, क्योंकि प्रायः यही तथ्य वैज्ञानिकों का भी है कि पृथ्वी में जीवन का प्रारम्भ जल से हुआ था।[11] अतः ऐतरेयोपनिषद् के विवेचित तथ्यों में विज्ञान के मतों की पुष्टी होना यह

दर्शाता है कि प्राचीन ऋषियों के तथ्य पूर्णतः सत्य हैं। वर्तमान में इन मतों का पाश्चात्यों के द्वारा स्पष्टीकरण मात्र ही हुआ है। इन्हें वर्तमान में प्रतिपादित मान लेना प्राचीन भारतीय ग्रंथो को अनदेखा करना मात्र होगा।

इस शोध प्रपत्र के माध्यम से यही प्रतिपादित करने का प्रयत्न किया गया है कि ऐतरेय उपनिषद् में महर्षि ऐतरेय का पृथ्वी की भोगोलिक संरचना से संबन्धित मत पूर्णतः वर्तमान की वैज्ञानिक अवधारणाओं के अनुकूल हैं। जीवों के प्रथम उत्पत्ति संबन्धि मत भी सर्वथा वैज्ञानिक तथ्य की पुष्टी करता है। प्रस्तुत शोध–प्रपत्र ऐतरेयोपनिषद् व भूगोल में प्रचलित सिद्धान्तों के आधार पर बनाया गया है। विज्ञान के शोधार्थीयों के लिये यह विषय अत्यन्त रोचक व प्रमाणिक हो सकता है। संस्कृत भाषा के लिये यह स्वागत योग्य होगा की विद्वत्परिषदों में ऐसे विषयों पर चर्चा हो। इस भाषा में उपलब्ध साहित्य भारत का गौरव है। अतः इसके अध्ययन को प्रासंगिक बनाने का प्रयत्न करना ही होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भौतिक भूगोल / सविन्द्र सिंह / प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहबाद / अध्याय–4,पृ0सं0 42
2. भौतिक भूगोल / सविन्द्र सिंह / प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहबाद / अध्याय–32,पृ0सं0 402
3. ईषादि नौ उपनिषद् (षाङ्करभाष्यार्थ)गीताप्रेस गोरखपुर / सं0–2068(2011)ऐतरेय उपनिषद् पृ0सं0707–810 /
4. ईषादि नौ उपनिषद (षाङ्करभाष्यार्थ)गीताप्रेस गोरखपुर / सं0–2068(2011)ऐतरेय उपनिषद् पृ0सं0812 /
5. भौतिक भूगोल / सविन्द्र सिंह / प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहबाद / अध्याय–32,पृ0सं0 411 /
6. ईषादि नौ उपनिषद (षाङ्करभाष्यार्थ)गीताप्रेस गोरखपुर / सं0–2068(2011)ऐतरेय उपनिषद् पृ0सं0812 /
7. भौतिक भूगोल / सविन्द्र सिंह / प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहबाद / अध्याय–32,पृ0सं0 413 /
8. ईषादि नौ उपनिषद (षाङ्करभाष्यार्थ)गीताप्रेस गोरखपुर / सं0–2068(2011)ऐतरेय उपनिषद् पृ0सं0812 /
9. भौतिक भूगोल / सविन्द्र सिंह / प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहबाद / अध्याय–4,पृ0सं0 42–49 /
10. ईषादि नौ उपनिषद (षाङ्करभाष्यार्थ)गीताप्रेस गोरखपुर / सं0–2068(2011)ऐतरेय उपनिषद् पृ0सं0816 /
11. भौतिक भूगोल / सविन्द्र सिंह / प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहबाद / अध्याय–43,पृ0सं0 572 /

****